श्री हुकम चन्द कछवाय (देवास) जो प्रस्ताव व सुझाव सामने आया है उस पर मैं अपना अमेंडमेंट रखना चाहता हूं ।

Mr. Speaker: No amendment is allowed.

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय, यह बहुत ज्यादा सजा है, सजा कम की जाये ।

Mr. Speaker: The question is:

"That Shri Kapur Singh, a Member of the House, named by the Speaker, be suspended from the service of the House for the remainder of the session."

Those in favour will say 'Aye'.

Some hon. Members: Aye.

Mr. Speaker: Those against will say 'No'.

Some hon. Members: No.

Mr. Speaker: I think the Ayes have it. The Ayes have it. The Ayes have it.

The motion was adopted.

Shri Surendranath Dwivedy: Sir, what happened to my suggestion that the words be expunged?

Mr. Speaker: I have not taken a decision. If that is the opinion of the House, they might be expunged.

Shri Hari Vishnu Kamath: Sir, after having a Member and punished him, if you expunge the words from the records....

Mr. Speaker: We can expunge even then. It is not subject to any appeal or revision, that we have to show it to anybody.

Shri Hari Vishnu Kamath: The Member has been named and punished also. Now if those words are expunged from the record, for the future historian, the record will not show anything at all, why this was done.

Several hon. Members: That should be expunged.

Mr. Speaker: If that is the opinion of the House, I order its expunction.*

Shri Hem Barua: Sir, as I pointed out before the Member was actually punished, if you expunge the words from the records there would not be anything to show in the record that on the face of this he deserved that punishment. The two things cannot go together.

Mr. Speaker: I have already expunged.

12.54 hrs.

RE: POINT OF ORDER

श्री राम मनोहर लोहिया (फर्रुखाबाद) : अध्यक्ष महोदय, श्री सुब्रह्मण्यम के खिलाफ विशेषाधिकार के प्रस्ताव पर......

अध्यक्ष महोदय : वह कल लिया जायेगा ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, मुझे एक व्यवस्था का प्रश्न इस सम्बन्ध में उठाने दीजिये ।

श्री दाजी (इन्दौर) : अभी ट्रेन डिरेल हो गई, कल मिनिस्टर डिरेल हो जायेंगे, परसों कुछ और डिरेल हो जायेगा ।

अध्यक्ष महोदय : इस तरह से तो ठीक नहीं हैं । मुझे मंत्री महोदय ने सुबह टेलिफोन किया कि चूंकि सारी कार्रवाई हिन्दी में है इसलिये वह उस का तर्जुमा करा रहे हैं । उन को थोड़ा सा वक्त दिया जाये । मैं इसे कल ले लूंगा क्योंकि मैंने सोचा कि वह समझ लें और उस का जवाब दे सकें । दूसरे मेरे पास श्री

*For expunction please *see* col. 3566.

[अध्यक्ष महोदय]

मधु लिमये की चिट्ठी भी आई है। उन्होंने यह तो नहीं कहा कि इस को पोस्टपोन किया जाये, पर लिखा है कि मैं बाहर जा रहा हूं बाकी कार्रवाई के लिये............

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं व्यवस्था का प्रश्न उठा रहा हूं। अब प्रश्न यह रह गया है कि क्या मंत्री महोदय अपनी सफाई इस सदन के सामने दें या विशेषाधिकार समिति के सामने दें। उन को सफाई देने का मौका विशेषाधिकार समिति के सामने भरपूर रहेगा। इस सम्बन्ध में मुझे यह कहना है कि पी० ए० सी० ने दो बार मंत्री महोदय के खिलाफ यह इल्जाम लगाया है कि उनके जो कुछ भी तर्क रहे हों, सबब रहे हों, जिन से उन्होंने अपने पहले हुक्म को बदला, वह आव्स्क्योर हैं।

अध्यक्ष महोदय : एक दफा मैंने कल सुना एक दफा कल सुनना है, तब फिर एक दफा आज कैसे सुन सकता हूं। मैं माननीय सदस्य को कल सुन लूंगा।

डा० राम मनोहर लोहिया : कल कोई रहेंगे, कोई नहीं। आप मेरी बात सुन लें। यह बात ऐसी है कि इसके ऊपर जो पहले की नजीरें हैं, कि जब दो बार पी० ए० सी० ने किसी मंत्री के खिलाफ इतना गम्भीर आरोप लगा दिया तो एक मिनट के लिये भी उसे नहीं रहना चाहिये। अंग्रेजों के सदन में तो यह होता है कि वह सीधे चला जाता है विशेषाधिकार समिति के सामने। आप देख रहे हैं कि किस तरह से यह सारा देश सेठ, नौकरशाह और मंत्री के त्रिकोण की साजिश के कारण बरबाद होता जा रहा है। इसमें जीतपाल सेठ हैं, मंत्री सुब्रह्मण्यम हैं और नौकरशाह भूतलिंगम हैं जिन के ऊपर अब की रिपोर्ट आई......

अध्यक्ष महोदय : मैंने आप से कहा कि जब मुझे कल सुनना है तो आज समय क्यों लिया जाये।

डा० राम मनोहर लोहिया : इस के अलावा, अच्छा, इसे छोड़ दीजिये.....

अध्यक्ष महोदय : मैं कल आप को भी सुनूंगा। जो कुछ आप को कहना है वह कल कह दीजियेगा।

डा० राम मनोहर लोहिया : कल बहुत से लोग रहें या न रहें। हर सदस्य के अपने कर्त्तव्य होते हैं और कर्त्तव्यों के कारण कोई यह समझना कि सारे लोग यहां रह पायेंगे यह जरा मुश्किल है। इस के अलावा आप ने कल रेल गाड़ियों के उलटने के कारण इस विशेषाधिकार के मामले को आज के लिये टाला। अब अगर आज फिर से आप इस को टालते हैं तो आप जानते हैं कि इस वक्त क्या हो रहा है। प्रशासकों की तरफ से, जो आई० सी० एस० और आई० ए० एस० कहलाते हैं, एक गम्भीर संकल्प हो चुका है कि अगर इस मामले में कोई कार्रवाई की गई तो वह रुकावट डालेंगी। इसके अलावा.....

अध्यक्ष महोदय : डाक्टर साहब, मैं आप से बार बार कह रहा हूं कि दो दफे इस पर वक्त न खर्च किया जाये। जब हम इसे कल ले रहे हैं तब आप को भी मौका मिलेगा। आप......

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं यह नहीं कह रहा हूं कि इसे कल लिया या न लिया जाये। मैं कह रहा हूं कि यह मामला विशेषाधिकार समिति के सामने बिना एक सेकेन्ड की देर के सुपुर्द कर देना चाहिये। मंत्री महोदय को यहां सफाई देने की कोई जरूरत नहीं है। इस मामले पर काफी बहस हो चुकी है। पी० ए० सी० ने साफ कह दिया है कि मंत्री महोदय के सबब आव्स्क्योर हैं। आव्स्क्योर लिखने का मतलब हो गया कि अब वह सबब किसी भी तर्क के अनुसार माने नहीं जा सकते। आप जानते हैं कि इसके साफ मतलब क्या होते हैं। या तो उन की तरफ से गम्भीर लापरवाही हुई है या उन की कोई बेईमानी हुई है। आव्स्क्योर का केवल एक मतलब होता है। दोनों हालतों में पी० ए० सी० से जो बात

आई है, वह विशेषाधिकार समिति के सामने जाना चाहिये । यह पता लग जायेगा कि अगर उन की मुजरिमाना, अपराधी लापरवाही हुई है तो और भी मंत्री इस में सामने आयेंगे । अगर उन की तरफ से बेईमानी हुई है तो वह सामने आयेगी । वह सफाई अब यहां न दें बल्कि विशेषाधिकार समिति के सामने जा कर दें । इसलिये अब सवाल यह नहीं है कि आप इस मामले का कल लें या परसों लें बल्कि यह है कि फौरन इस को विशेषाधिकार समिति के सामने दें ।

आप जानते हैं कि यह मंत्री महोदय कौन हैं । यह मंत्री महोदय अंग्रेजी रखने के लिये फौरन इस्तीफा देने को तैयार रहते थे . . (**व्यवधान**) । आज यह मंत्री . . .

अध्यक्ष महोदय : डाक्टर साहब, आप मुझे सुन लीजिये । हिन्दी का सवाल यहां नहीं हो सकता । जितनी बात आप को कहनी है वह मैं सुन लिया ।

डा० राम मनोहर लोहिया : इस को फौरन विशेषाधिकार समिति के सामने जाना चाहिये ।

अध्यक्ष महोदय : अंग्रेजी पर इस्तीफा देने के लिये तैयार हैं या नहीं, यह अलाहदा सवाल है । उस से इस का क्या मतलब . . .

डा० राम मनोहर लोहिया : इस को छोड़िये । विशेषाधिकार समिति . . . . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये । मैंने विशेषाधिकार की बात सुन ली ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं कह रहा हूं कि यहां तक नौबत आ गई है कि मंत्री महोदय के आचरण के साथ साथ . . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अब आप एक बड़ा मुजरिमाना आरोप सुनिये । इस के साथ साथ . . . (**व्यवधान**)

अध्यक्ष महोदय : डाक्टर साहब अब आप बैठ जाइये, मैंने सुन लिया आप को ।

Shri N. Sreekantan Nair (Quilon): Sir, because there is already an allegation against South Indians, if you allow him to proceed like this, we will be unnecessarily forced to support Shri Subramaniam.

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं बैठता हूं । पर . . .

अध्यक्ष महोदय : अब आप बैठ जाइये । मैंने इतना आप को सुन लिया । बार-बार कहता चला गया कि आप बन्द करें, आप बन्द करें । मैंने कहा है कि कल मैं मिनिस्टर को सुनूंगा । मैं मिनिस्टर को जरूर सुनूंगा . . .

श्री किशन पटनायक (सम्बलपुर) : आप ने कल खुद कहा था कि आज इसे लिया जायेगा । सिर्फ मंत्री महोदय ने कह दिया तो आप इसे टाल रहे हैं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, एक गम्भीर आरोप है । मैं आप से कह रहा हूं कि प्रधान मंत्री . . . (**व्यवधान**) . . . प्रधान मंत्री नहीं हैं, सदन के नेता नहीं हैं ।

अध्यक्ष महोदय : अब क्या आप बैठेंगे नहीं ।

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं आप से यह पूछ रहा हूं कि प्रधान मंत्री नहीं हैं, सदन के नेता नहीं हैं । आज उन को इस वक्त रहना चाहिये या नहीं । यहां मामला चल रहा है और यह सब सोये हुए हैं । इस मामले में . . . .

अध्यक्ष महोदय : मैंने आप से इतनी दफे कहा कि आप जैसे पुराने आदमी जो हैं और लीडर हैं उन को तो ऐसा सलूक नहीं करना चाहिये ।

डा० राममनोहर लोहिया : मैं कहां का लीडर रह गया हूं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (बिजनौर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आप की सेवा में यह निवेदन करना चाहता हूं कि जैसा अभी आप ने कहा कि खाद्य मंत्री ने केवल इसलिये आप से समय मांगा है कि कल जो कार्रवाई हुई, श्री मधु लिमये ने विशेषाधिकार सम्बन्धी जो अपना वक्तव्य दिया वह हिन्दी में थी और उस के अनुवाद की आवश्यकता रहेगी । मैं इस विशेषाधिकार के प्रश्न से हट कर एक बात आपकी सेवा में निवेदन करना चाहता हूं । यह प्रश्न केवल विशेषाधिकार का नहीं है । प्रश्न गह है कि आप ने लोक लेखा समिति को दुबारा एक पैरा भेजा । उस के बाद भी पब्लिक अकाउंट्स कमेटी अपने पहले निर्णयों पर जमी रहती है । तो क्या हाउस आफ कामन्स में कोई इस प्रकार का उदाहरण है कि अगर पब्लिक अकाउंट्स कमेटी दो बार एक ही रिपोर्ट दे तो उस के बाद कोई मिनिस्टर अपने स्थान पर रह जाये । पब्लिक अकाउंट्स कमेटी की रिपोर्ट इंग्लिश में है, पब्लिक अकाउंट्स कमेटी की रिपोर्ट हिन्दी में नहीं ह । इसलिये मंत्री महोदय नहीं रह सकते ।

अध्यक्ष महोदय : रहें या न रहें । यह बात मेरे फैसला करने की नहीं है कि मिनिस्टर रह सकता है या नहीं ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : जनतन्त्र की री जिम्मेदारी आप पर भी आती है । अगर जनतन्त्र सुरक्षित रहेगा तो उस के एक भागीदार आप भी हैं

अध्यक्ष महोदय : यह फैसला करना मेरा काम नहीं है कि मिनिस्टर रहें या न रहें ।

Shri S. M. Banerjee (Kanpur): Sir, I want to know one thing. Yesterday, my hon. friend, Shri Daji and myself......

Mr. Speaker: I will take up that also.

Shri S. M. Banerjee: Sir, Kindly hear me for a second. Yesterday you asked Shri Madhu Limaye to let you know the specific points which according to him constitute a breach of privilege.

Mr. Speaker: He has sent me those.

Shri S. M. Banerjee: We thought we should also send you the specific points and we have sent them.

Mr. Speaker: I will consider them also.

Shri S. M. Banerjee: What I say is, we should get an opportunity tomorrow....

Mr. Speaker: I will see that. A promise cannot be given now. We will take it up tomorrow.

Shri S. M. Banerjee: Sir, we only want to see that this matter is discussed as early as possible, because the representatives of Messrs. Aminchand Pyarelal are trying to influence all sources.

Mr. Speaker: I have said that I will consider it tomorrow. What else can I do?

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय . . .

अध्यक्ष महोदय : बस अब और नहीं ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : हमें सुनते नहीं, बाकी लोगों को सुन लेते हैं ।

Mr. Speaker: We will now take up the next item, Papers to be laid on the Table. Shri Sanjiva Reddy.